11

असम के विद्यालयों में कला-शिक्षा की समस्याएँ

अपू बोनिया*
विवेक सिंह**

कला-शिक्षा मानव सभ्यता के साथ हजारों वर्षों से चली आ रही एक अमूल्य सांस्कृतिक विरासत है। प्रत्येक समुदाय और संस्कृति में कलाएँ होती हैं और कला की शिक्षा के बिना, एक समाज अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक नींव से उखड़ जाएगा। इसीलिए अधिकांश देशों के लोग इसे अपनी शैक्षिक प्रणाली में शामिल करते हैं। प्राथमिक विद्यालयों का कला-शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। भारत के पूर्वोत्तर में स्थित असम राज्य अपनी कला की विविधता एवं विशिष्टता के लिए जाना जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र असम के विद्यालयों में कला-शिक्षा से संबंधित समस्याओं का अध्ययन है। इसके लिए राज्य के दो जिलों के 149 प्रारंभिक विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है। यह अध्ययन शिक्षण संबंधी बुनियादी ढाँचे, प्रशासन आदि कई मुद्दों पर केंद्रित है। अध्ययन के निष्कर्ष में शिक्षकों में अपने काम के प्रति ईमानदारी की कमी, शिक्षकों की अनियमितता, वित्तीय सहायता की कमी और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा शामिल हैं। इसके लिए आवश्यक है कि राज्य के विद्यालयों में कला-शिक्षा संबंधी नवाचारों को लागू किया जाए।

प्रत्येक मानव समाज को समग्र वृद्धि और विकास के लिए एक मूलभूत घटक के रूप में कला की आवश्यकता होती है। इसलिए, कला शिक्षा को शैक्षिक प्रक्रियाओं का महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। असम अपनी विविध कलात्मक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी गति से और अद्वितीय क्षमता के साथ कला सीखता है, इसलिए उन्हें अपनी रचनात्मकता को उन तरीकों से विकसित करने में सक्षम बनाना चाहिए, जो उनके लिए सबसे उपयुक्त हों। कला में प्रतीकवाद है जो भावनाओं, विचार प्रक्रियाओं और अनुभवों से संबंधित है। शिक्षक को इस प्रतीकवाद को समझना चाहिए और विद्यार्थियों को इसके उदाहरण उपलब्ध कराने चाहिए।

कला और संस्कृति को बढ़ावा देना राष्ट्र के साथ-साथ व्यक्ति के लिए भी महत्वपूर्ण है। युवाओं में संस्कृति के प्रति जागरूकता और अभिव्यक्ति विकसित करना, उन्हें पहचान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देने के साथ-साथ विविध संस्कृतियों की पहचान को महत्वपूर्ण माना जाता है।

**सहायक आचार्य* (अतिथि संकाय), शिक्षा विभाग, माधवदेव विश्वविद्यालय, नार्थ लखीमपुर, असम 784 164
***सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश 211 002

सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति व्यक्तियों की भलाई के साथ-साथ समाज की भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण है; क्योंकि बच्चे हमारे सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा की एक मजबूत भावना और समझ के विकास के माध्यम से एक स्वस्थ सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान विकसित कर सकते हैं। कलाएँ लोगों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में सुधार करती हैं, सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करती हैं, जागरूकता बढ़ाती हैं और व्यक्तिगत आनंद बढ़ाने वाली कलात्मक क्षमताओं को बढ़ावा देती हैं। एक समुदाय की कला उसकी संस्कृति में एक वातायन की तरह है, इसलिए कला को संरक्षित करना और आगे बढ़ाना संस्कृति को संरक्षित और आगे बढ़ाने का एक आवश्यक हिस्सा है। भारत की कला और संस्कृति को कई धर्मों और संस्कृतियों के सदियों से चले आ रहे मिश्रण के रूप में जाना जा सकता है। इसमें हिंदू, बौद्ध, मुस्लिम, सिख, जैन और कई अन्य अल्पसंख्यकों और जनजातियों की संस्कृतियों का एक-दूसरे पर प्रभाव रहा है। 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विद्यार्थियों के बीच भाषाओं, कलाओं और संस्कृतियों से अवगत कराने के लिए कई उपायों का प्रस्ताव करती है। इन उपायों में स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में मुख्य प्रशिक्षकों के रूप में असाधारण स्थानीय लेखकों, कलाकारों, शिल्पकारों और अन्य विशेषज्ञों को नियुक्त करना शामिल है। पूरे पाठ्यक्रम में संगीत, कला और शिल्प पर अधिक बल देना; बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए त्रिभाषा फार्मूले का शीघ्र कार्यान्वयन; अधिक अनुभवात्मक भाषा शिक्षण का संचालन करना; आदिवासी और अन्य स्थानीय ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान को मानविकी, विज्ञान, कला, शिल्प और खेल पाठ्यक्रम में सटीक रूप से शामिल करना (शर्मा, 2023)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है, कला को शामिल करना एक क्रॉस-पाठ्यचर्या शैक्षणिक दृष्टिकोण है जो विभिन्न विषयों में अवधारणाओं को सीखने के आधार के रूप में कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं और रूपों का उपयोग करता है। अनुभवात्मक शिक्षा पर जोर देने के एक भाग के रूप में, कला-एकीकृत शिक्षा को न केवल आनंदमय कक्षाएँ बनाने के लिए, बल्कि हर स्तर पर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में मदद करती है। इसके साथ ही कला-एकीकृत दृष्टिकोण शिक्षा और संस्कृति के बीच संबंधों को मजबूत करेगा। 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में कला समेकित शिक्षा पर जोर दिया गया है।

वर्तमान परिदृश्य में कला सौंदर्यबोध विकसित करने के साथ अधिगम का एक साधन है। विद्यालयी शिक्षा में कला का बेहतर समावेशन विद्यार्थियों के समग्र विकास, प्रकृति और संस्कृति से जुड़ाव, बेहतर अभिव्यक्ति के साथ, डिजाइन, पेंटिंग, संगीत, नाटक, और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में संभावनाएँ प्रदान करता है। असम की कला और संस्कृति का इतिहास बहुत पुराना है, जिसमें संगीत, नृत्य, चित्रकला, शिल्पकला और हस्तशिल्प का विशेष योगदान है। कला शिक्षा के माध्यम से असम में इन परंपराओं को न केवल संरक्षित किया जा सकता है, बल्कि उन्हें आधुनिक संदर्भ में भी नया रूप दिए जाने की आवश्यकता है।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य असम के प्रारंभिक विद्यालयों में कला-शिक्षा से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन करना है।

अध्ययन विधि

वर्तमान अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति पर तैयार किया गया है। अध्ययन हेतु असम के उत्तरी लखीमपुर और बारपेटा जिले से 149 प्रारंभिक विद्यालयों को यादृच्छिक रूप से चयनित किया गया। आँकड़ा संग्रह हेतु प्रत्येक विद्यालय के एक कला-शिक्षक/शिक्षिका का साक्षात्कार किया गया। प्रारंभिक विद्यालयों के कला-शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं के बारे में आँकड़ा एकत्र किया गया और विषयवस्तु विश्लेषण किया गया। यह अध्ययन असम के सरकारी सहायता प्राप्त और निजी 149 प्रारंभिक विद्यालयों पर वर्ष 2022 में आयोजित किया गया।

अध्ययन का परिणाम

वर्तमान अध्ययन कला शिक्षा संबंधी कार्यान्वयन-स्तर की व्यावहारिक समस्याओं को समझने का एक प्रयास है जो प्रारंभिक विद्यालयों में कला-शिक्षा कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए सभी 149 प्राथमिक विद्यालयों का दौरा किया गया और कला-कक्षा में आने वाली समस्याओं का पता लगाने के लिए कला-शिक्षकों/शिक्षिकाओं के साक्षात्कार का आयोजन किया गया। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ एकत्र करने के बाद, अन्वेषक ने कुछ समस्याओं को सूचीबद्ध किया, जिससे कला-शिक्षकों को दिन-प्रतिदिन कक्षा में सामना करना पड़ता है। तालिका 1 में कला-शिक्षकों की समस्याओं को गिनाया गया है।

तालिका 1— विद्यालयों के सामने आने वाली समस्याएँ

क्र.सं.	विद्यालय और कला-शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं के प्रकार	'हाँ' प्रतिक्रिया	प्रतिशत में (%)	विद्यालयों की कुल संख्या
1.	प्रशिक्षित कला-शिक्षक का अभाव	126	85	149
2.	पर्याप्त कला सामग्री का अभाव	95	64	149
3.	अलग कक्षा-कक्ष का अभाव	116	78	149
4.	कला संबंधी उपकरण उपलब्ध नहीं है	134	90	149
5.	पर्याप्त कला सामग्री उपलब्ध नहीं कराना	95	64	149
6.	सेवाकालीन प्रशिक्षण का अभाव	75	50	149
7.	धन की कमी	95	64	149
8.	पाठ्यक्रम से अनभिज्ञ	123	83	149
9.	व्यावहारिक गतिविधियों से संबंधित समस्याएँ	138	93	149
10.	शिक्षण सहायक सामग्री (टी.एल.एम.) की समस्याएँ	129	87	149
11.	कक्षा और समय-सारिणी के साथ समस्याएँ	138	93	149

1. **प्रशिक्षित कला-शिक्षकों की कमी**— तालिका 1 से पता चलता है कि 85 प्रतिशत विद्यालयों में प्रशिक्षित कला-शिक्षक नहीं थे। अधिकतम विद्यालयों की यह आम समस्या है। विशेषरूप से 'असम जातीय विद्यालय बोर्ड' और 'एस.एस.ए.' के अंतर्गत आने वाले कुछ विद्यालयों में कला शिक्षक थे, परंतु अन्य में कमी पाई गई।

2. **पर्याप्त कला सामग्रियों की कमी**— तालिका से पता चलता है कि 149 विद्यालयों में से 64 प्रतिशत विद्यालयों में पर्याप्त कला सामग्रियों की कमी है। सबसे ज्यादा सरकारी विद्यालय इन समस्याओं से जूझ रहे हैं।

3. **अलग कक्षा-कक्ष का अभाव**— उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 78 प्रतिशत विद्यालयों ने अलग कक्षाओं की कमी के बारे में बताया था। यह समस्या सीधे तौर पर कलाकृति और गतिविधियों के बारे में विद्यार्थियों की धारणाओं से जुड़ी हुई थी, क्योंकि पूरी तरह से व्यवस्थित कक्षा के बिना, कला शिक्षा को ठीक से पढ़ाना संभव नहीं है।

4. **कला-संबंधी उपकरण उपलब्ध नहीं**— तालिका से पता चलता है कि 90 प्रतिशत विद्यालयों में कला से संबंधित उपकरण उपलब्ध नहीं है। अधिकांश सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी गरीब परिवारों से आते थे। एक अध्यापक ने परिवार की स्थिति और विद्यार्थियों की शिक्षा पर, इसके पड़ने वाले प्रभाव पर टिप्पणी की। इस संदर्भ में यह पाया गया कि गरीब विद्यार्थी कला से संबंधित उपकरण ले आने में भी असमर्थ थे।

5. **पर्याप्त कला सामग्री उपलब्ध नहीं कराना**— तालिका से पता चलता है कि 149 विद्यालयों में से 64 प्रतिशत विद्यालयों ने पर्याप्त कला सामग्री उपलब्ध नहीं कराने की सूचना दी है। अधिकतर सरकारी विद्यालयों की शिकायत है कि सरकार को इस विषय में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसलिए उन्हें कला विषय से संबंधित सामग्री उपलब्ध नहीं कराई जाती है।

6. **सेवाकालीन प्रशिक्षण का अभाव**— तालिका से पता चलता है कि 50 प्रतिशत विद्यालयों में सेवाकालीन प्रशिक्षण का अभाव है। इसलिए सरकारी विद्यालयों ने किसी भी सेमिनार/कार्यशाला की व्यवस्था करने में रुचि नहीं ली और कला शिक्षण में किसी भी नवीन विचारों का उपयोग नहीं किया। सरकारी विद्यालय के एक शिक्षक ने कहा कि "कला-शिक्षा में उनका शिक्षण मुख्य रूप से ड्राइंग पर केंद्रित है।" हालाँकि, निजी तौर पर प्रबंधित विद्यालयों में, एक प्रशिक्षित शिक्षक होता था और सभी निजी विद्यालय कार्यशालाओं, कला प्रदर्शनियों और सेमिनारों की व्यवस्था कर सकते थे। हालाँकि विद्यालय परिसर के भीतर जिला और राज्य स्तर पर आयोजित कार्यशालाओं में सरकारी विद्यालयों ने कम भाग लिया, सेमिनार और कार्यशालाओं के आयोजन अक्सर नहीं पाए गए।

7. **धन की कमी**— धन की कमी विद्यालयों को कला से संबंधित सामग्री, शैक्षिक सामग्री, प्रौद्योगिकी या शिक्षण सहायता आदि को खरीदने से रोक सकती है। सरकारों और नीति निर्माताओं को शिक्षा वित्त पोषण को प्राथमिकता देने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि प्राथमिक विद्यालयों के सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्राप्त हों। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 64 प्रतिशत विद्यालयों में धन की कमी है। एक सरकारी विद्यालय के अध्यापक ने कहा कि "धन की कमी खेल, कला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसी पाठ्येतर गतिविधियों की उपलब्धता को प्रतिबंधित कर सकती है"।

8. **पाठ्यक्रम से अनभिज्ञ**— उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि 83 प्रतिशत विद्यालय पाठ्यक्रम से अनभिज्ञ हैं और शिक्षक पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम का पालन नहीं करते।

9. **व्यावहारिक गतिविधियों से संबंधित समस्याएँ**— तालिका से पता चलता है कि 93 प्रतिशत विद्यालयों को व्यावहारिक गतिविधियों को करने में समस्या का सामना करना पड़ा। अधिकतम विद्यालयों में व्यावहारिक गतिविधियों को लेकर समस्या है, विशेष रूप से कला सामग्री आपूर्ति की कमी, सीमित कक्षा-समय और विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी आदि।

10. **शिक्षक सहायक सामग्री (टी.एल.एम.) की समस्याएँ**— 87 प्रतिशत विद्यालयों को टी.एल.एम. की समस्याओं का सामना करना पड़ा है। अधिकतम सरकारी विद्यालयों में पेंट, ब्रश, पेंसिल, मार्कर, मिट्टी और अन्य सामग्री की समस्या है। एक निजी विद्यालय के कला-शिक्षक ने कहा, "कला-शिक्षा में शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया के लिए तस्वीरें, छवियाँ, कलाकृतियाँ या वीडियो महत्वपूर्ण हैं, खासकर प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए"।

11. **कक्षा और समय-सारिणी के साथ समस्याएँ**— तालिका से पता चलता है कि 93 प्रतिशत विद्यालयों में कक्षा और समय-सारिणी को लेकर समस्या है। कला की कक्षा के लिए केवल 30 मिनट का समय दिया जाता था और अधिकतम विद्यालयों में कला की कक्षा हमेशा दोपहर के बाद आखिरी पीरियड में ली जाती थी।

कला-शिक्षा को लेकर असम के प्राथमिक विद्यालय बड़ी संख्या में बुनियादी ढाँचे की समस्या का सामना कर रहे हैं। कला-शिक्षकों के अनुसार कला शिक्षा पर विद्यालयों की अन्य आम समस्याओं को नीचे प्रस्तुत किया गया है—

- विद्यार्थियों पर अन्य विषयों का अत्यधिक बोझ है।
- विद्यार्थियों को कोई प्रमाणपत्र नहीं दिया जाता, क्योंकि उनका कोई अलग उपयोग नहीं होता।

- अच्छी पुस्तकों की अनुपलब्धता।
- विद्यालयों के कला-शिक्षा दिशानिर्देशों की कमी।
- कला-शिक्षा विषय अन्य विषयों की तुलना में उपेक्षित है।
- कला-शिक्षा से संबंधित संसाधनों का अभाव।

अध्ययन की चर्चा

अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कला-शिक्षा को कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो इसकी प्रभावशीलता में बाधा बनती है। इस अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश सरकारी विद्यालयों में अपर्याप्त धन और संसाधन, व्यापक रूप से कला-कार्यक्रम करने में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं। एक विशिष्ट निष्कर्ष में पाया गया कि मुख्य विषयों पर संकीर्ण ध्यान विद्यार्थियों की रचनात्मक सोच और कलात्मक विकास को सीमित करता है। कला-शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसरों के अपर्याप्त होने के कारण शिक्षण पद्धतियाँ पुरानी हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को समृद्ध कलात्मक वातावरण प्रदान करने के लिए कला-शिक्षा कार्यक्रमों में वित्तीय सहायता बढ़ाने और संसाधनों का आवंटन आवश्यक है। शिक्षा-नीति निर्माताओं को एक सर्वांगीण शिक्षा में कला के महत्व को पहचानने और एक संतुलित पाठ्यक्रम को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, जिसमें मुख्य विषय और कला-शिक्षा दोनों शामिल हों। इसके अतिरिक्त, कला-शिक्षकों के लिए चल रहे व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करना, उन्हें विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से प्रेरित करने और मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान से युक्त करना आवश्यक है। अंत में, कला-शिक्षा में प्रौद्योगिकी उपकरणों और डिजिटल मीडिया को एकीकृत करने से विद्यार्थियों के सीखने के अनुभव में वृद्धि हो सकती है और उन्हें रचनात्मक उद्योग की उभरती माँगों के लिए तैयार किया जा सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करके, समाज में एक मजबूत और समावेशी कला-शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दिया जा सकता है, जो विद्यार्थियों को उनकी रचनात्मकता का पता लगाने, खुद को अभिव्यक्त करने में मदद करेगा। प्रस्तुत शोध निष्कर्ष उबांगिडा (2019) और संगीता (2019) के शोध परिणामों से मेल खाता है; जिससे पता चलता है कि विद्यालय स्तर पर कला-शिक्षा में शिक्षकों की कमी, संसाधनों की अनुपलब्धता के साथ-साथ खराब शिक्षण रणनीतियाँ, विद्यार्थी प्रेरणा की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार के परिणाम रामचंदरन (2006) के अध्ययन में पाया गया, जो केरल के माध्यमिक विद्यालयों में कला-शिक्षा कार्यक्रमों के मूल्यांकन से संबंधित है। इस अध्ययन में पाया गया कि मौजूदा कला-शिक्षा का पाठ्यक्रम अक्षम है, शिक्षा प्रणाली को नीचे से ऊपर तक पुनर्गठित करने की आवश्यकता है और अपर्याप्त धन और संसाधन व्यापक कला-कार्यक्रम प्रदान करने में बाधाएँ उत्पन्न करते हैं।

सिफारिशें

प्रस्तुत अध्ययन में कला शिक्षा की प्रगति में बाधा डालने वाले कई मुद्दों की पहचान की गई है। इन समस्याओं के समाधान हेतु यह आवश्यक है कि

कक्षा 1–8 तक कला-शिक्षा के लिए अलग पाठ्यपुस्तकें शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत से काफी पहले तैयार और वितरित की जानी चाहिए। इस संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के प्रावधानों को ध्यान रखने की आवश्यकता है। इसी प्रकार रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी' की तरह राज्य की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यपुस्तक निर्मित की जाए। शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में पाठ्यक्रम, मैनुअल, पाठ्यपुस्तकें और अन्य शैक्षिक सामग्री सही मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त सभी विद्यालयों को एक पूर्ण वर्ष की योजना भी उपलब्ध कराई जानी चाहिए। सभी विद्यालयों में कला-कक्षाओं के लिए आवश्यक उपकरणों के साथ एक अलग कक्षा होनी चाहिए। उचित शिक्षण की सुविधा के लिए प्रशिक्षुओं को शिक्षण अधिगम सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए। संबंधित प्राधिकारी द्वारा शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए सेमिनार, कार्यशालाएँ, क्षमता निर्माण कार्यक्रम, अभिविन्यास कार्यक्रम आदि आयोजित किए जाने चाहिए। बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में कला-शिक्षा को विभिन्न विषयों के साथ जोड़ने की पहल की गई है। इस दृष्टिकोण के तहत असम के विद्यालयों में कला को विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, भाषा आदि विषयों के साथ जोड़ने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों को एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

असम के प्रारंभिक विद्यालयों में कला-शिक्षा से संबंधित विभिन्न समस्याओं का सामना करते देखा जा रहा है, जो इसकी प्रभावशीलता में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अधिकतर विद्यालयों में अपर्याप्त धन और संसाधन, व्यापक कला-कार्यक्रमों की कमी, प्रशिक्षित-शिक्षकों की कमी, सेवाकालीन प्रशिक्षण, कला कक्षाओं एवं सहायक सामग्रियों का आभाव, पाठ्यक्रमों के प्रति अनभिज्ञता, व्यावहारिक गतिविधियों संबंधित समस्याएँ, समय-सारिणी में कला-शिक्षा को कम प्राथमिकता, अन्य विषयों पर अधिक बोझ, कला-शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ हैं। इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थियों को समृद्ध कलात्मक अनुभव प्राप्त हो सके और उनकी रचनात्मकता और सांस्कृतिक समझ का विकास हो सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए, कला शिक्षा को मुख्यधारा के शैक्षिक ढाँचे में अधिक प्रभावी ढँग से शामिल करने की आवश्यकता है। इसके तहत कला शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण, पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता और कला के विभिन्न रूपों को अन्य शैक्षिक विषयों के साथ जोड़ने की पहल की जानी चाहिए। इसके साथ ही राज्य की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यपुस्तकों और शैक्षणिक सामग्री का विकास किया जाना चाहिए, ताकि कला शिक्षा को अधिक प्रभावी और सुलभ बनाया जा सके। इस प्रकार, असम के विद्यालयों में

कला-शिक्षा के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिससे विद्यार्थियों को उनकी रचनात्मकता और सांस्कृतिक पहचान को विकसित करने में मदद मिलेगी।

संदर्भ

दास, रूमी. 2020. करंट चैलेंजेस इन आर्ट एजुकेशन : ए केस स्टडी ऑफ असम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट एंड डिजाइन एजुकेशन.* 38(2), पृ.सं. 125–140.

भास्कर, एस. और एस. राव. 2018. आर्ट एजुकेशन इन इंडिया : ए स्टडी ऑफ पॉलिसीज, प्रैक्टिस एंड परसेप्शन. *इंडियन जर्नल ऑफ कम्पेरेटिव एजुकेशन एंड डेवलपमेंट.* 19(1), पृ.सं. 83–94.

रामचंद्रन. 2006. एन इवैल्यूएशन ऑफ द आर्ट एजुकेशन प्रोग्राम्स इन सेकेंडरी स्कूल्स ऑफ केरल (पीएच.डी. थीसिस). डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ कालिकट, पश्चिम बंगाल.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शर्मा, ई. 2023. प्रमोशन ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस, आर्ट एंड कल्चर थ्रू एनईपी 2020. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक मॉडर्न रिसर्च एंड टेक्नोलॉजी.* 11(1), पृ.सं. 28–33.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

संगीता, के.एस. 2019. स्टेट्स एंड प्रॉब्लम्स ऑफ म्यूजिक एजुकेशन इन केरल एट स्कूल लेवल (पीएच.डी. थीसिस). डिपार्टमेंट ऑफ म्यूजिक, श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ संस्कृत, केरल.